राष्ट्रपति ने किया...

- पेज 1 का शेष...

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि भारत की समृद्ध और आध्यात्मिक विरासत में महिलाओं को यथोचित सम्मान और स्थान दिया गया था। हमारे वेदों, महापुराणों और उपनिषदों में महिलाओं की स्तुति करुणा और ज्ञान के स्त्रोतों के रूप में की गयी है।

मुश्किल दौर में संस्थान का सहारा

मुर्मू ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से मेरा बेहद करीबी रिश्ता है। 2009 से मैं संस्थान से जुड़ी हुई हूँ। मेरे मुश्किल दौर में संस्थान की बहनों ने मुझे सहारा दिया था। ब्रह्माकुमारीज़ को मैं अपना घर समझती हूँ। यह मेरे बाबा का घर है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने भारतीय मूल्यों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है। संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित विश्व का बड़ा संस्थान है। 90 साल पहले संस्थान के संस्थापक ब्रह्माबाबा ने नारी शक्ति और नेतृत्व को उचित प्रतिनिधित्व दिया था। आज संस्थान की चालीस हज़ार बहनें दुनिया के 140 देशों में अध्यात्म, भारतीय संस्कृति और परंपरा को आगे बढ़ा रही हैं।

कल्प तरु प्रोजेक्ट के तहत पौधारोपण करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू, ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

ओआरसी के समर्पित भाई-बहनों के साथ महामहिम राष्ट्रपति मुर्मू।

हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय और केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह भी कार्यक्रम में मौजूद थे। सम्मेलन में चार हज़ार से अधिक महिलाओं सहित कई देशों के राजदूत भी उपस्थित रहे। इससे पहले मुर्मू ने ओम शांति रिट्रीट सेंटर के पिरामिड एवं मेडिटेशन रूम में जाकर ध्यान किया। साथ ही कल्प तरू अभियान के तहत वृक्षारोपण भी किया।

ब्र.कु. शिवानी दीदी ने कराया मेडिटेशन

प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शिवानी दीदी ने मेडिटेशन का अभ्यास कराते हुए कहा कि रोज़ अभ्यास करें कि मैं सर्वशक्तिमान परमात्मा की संतान, एक शक्तिशाली आत्मा हूँ। मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ। मैं स्वर्णिम भारत और स्वर्णिम दुनिया का निर्माण करने वाली हूँ। मैं आत्मा शिव की शक्ति हूँ, मैं शिव की शक्ति हूँ।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को विश्व भर में फैलाने में ब्रह्माकुमारीज़ का अहम योगदान - राज्यपाल

हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि भारत की संस्कृति और सभ्यता को दुनिया भर में फैलाने में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का बड़ा योगदान है। समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना में महिलाओं की भूमिका अहम है। नारियों की प्रशंसा हमारे धर्मग्रंथों में भी की गई है। हमारी राष्ट्रपति भी आदर्शों की प्रतिमूर्ति हैं। आपका जीवन तपस्यामय है। आज महिलाओं को शिक्षित और स्वावलंबी होने की आवश्यकता है। आज बेटियां सेना से लेकर हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखा रही हैं। हम कितना भी पैसा कमा लें। यदि मन शांत नहीं है तो ऐसा व्यक्ति सदाचारी नहीं बन सकता है। ब्रह्माकुमारी समाज ऐसी नारियों को तैयार करके विश्व में शांति फैलाने में लगा हुआ है।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार

संस्थान की अति. मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मोहिनी दीदी,न्यू यॉर्क ने कहा कि शांति और युद्ध दोनों तरह के विचार मन में ही आते हैं। हमारी मनोवस्था ही तय करती है कि हम कैसा निर्णय लेते हैं। संस्थान के अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि भगवान ने महिलाओं के द्वारा भारत और पूरे विश्व को पुनः शक्तिशाली, संपन्न और स्वर्णिम बनाने के लिए कलश महिलाओं के सिर पर रखा है।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

व्यर्थ विचारों के तूफान को कैसे लगायें फुलस्टॉप...!!!

बाबा ने एक मुरली में हमें इन दो बातों को अंडरलाइन कराया था। एक है सम्पूर्ण पवित्रता की बात और दूसरी, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना। जब बाबा ने कहा कि बच्चे व्यर्थ भी एक प्रकार की इम्प्युरिटी है तो व्यर्थ संकल्प यानी सम्पूर्ण पवित्रता को देखना है तो उसका आधार यही है कि हमारे जो मन के संकल्पों की ब्रेक है वो पॉवरफुल होनी चाहिए। तो उसके लिए बाबा ने कहा सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास ज़रूर हो। तभी सम्पूर्ण पवित्रता की ओर हम आगे बढ़ सकते हैं। अगर व्यर्थ अंदर चलता रहे, चलो, ब्राह्मण बनने के बाद निगेटिव बहुत न के बराबर हो गया। लेकिन फिर भी शिकायत यह बनी रहती है कि व्यर्थ अभी तक भी चलता है और जब योग करने बैठते हैं तब भी व्यर्थ चलता है, उसको कंट्रोल करना कभी-कभी बहुत मुश्किल हो जाता है और ये चीज़ अंत तक चलनी है इसलिए उसको कैसे फुलस्टॉप लगाना है ये भी तो आना चाहिए।

किसी ने मुझ से प्रश्न किया कि ऐसा तो नहीं है कि बिंदी लगाना है माना यहां(मस्तक पर) बिंदी लगा दिया तो संकल्प स्टॉप हो गये। ऐसे बिंदी लगा नहीं सकते फिज़िकली कोई, तो संकल्पों को फुलस्टॉप लगाने का भाव क्या है बाबा का? तो उस पर मेरा चिंतन चल रहा था कि सम्पूर्ण पवित्रता का आधार ही यही है। अगर व्यर्थ बंद ही नहीं हुआ, रूका ही नहीं तो सम्पूर्ण पवित्रता की बात तो बहुत दूर हो गई। तो पहला पुरूषार्थ हमारा फुलस्टॉप लगाना। तो फुलस्टॉप लगाना किसको कहा जाता है? पहली बात, फुलस्टॉप लगाना माना ये नहीं कि हमारा मन निर्संकल्प हो जायेगा, संकल्प चलना बंद हो जायेंगे उसको फुलस्टॉप कहा? नहीं। लेकिन

> व्यर्थ विचारों का तूफान ऐसा है कि जब एक बार चालू हो जाये, तो क्या होता है? रूकने का नाम नहीं लेता और ऐसे समय में अगर योग किया तो क्या होगा...

फुलस्टॉप लगाने का मतलब है कि अपनी विचारधारा को एक दिशा देना। श्रेष्ठ, समर्थ और शक्तिशाली दिशा देना। विचार बंद नहीं होंगे, विचार तो कंटिन्यु चलेंगे,लेकिन उसको मोड़ देना बहुत आवश्यक है। अब उस समय मोड़ने के लिए क्या करना पड़ेगा? व्यर्थ विचारों का तूफान ऐसा है कि जब एक बार चालू हो जाये, तो क्या होता है? रूकने का नाम नहीं लेता और ऐसे समय में अगर योग किया तो क्या होगा, और ज़्यादा चलेगा। क्योंकि उसको स्पेस मिल जाता है, टाइम मिल जाता है तो और अधिक चलना शुरू हो जायेगा। इसलिए जब व्यर्थ चल रहा हो तो उसको फुलस्टॉप लगाने के लिए या दिशा देने के लिए स्थूल सेवा शुरू करो। उस समय योग में बैठना समझदारी नहीं है या स्थूल सेवा, कर्मणा या वाचा सेवा शुरू करो। किसी-न-किसी को ज्ञान सुनाओ, अपने विचारों को अपने आप एक दिशा मिल जायेगी।

जब किसी को ज्ञान सुनाते हैं तो कई लोग सोचते हैं कि हमारी स्थिति ही नहीं है। उस समय व्यर्थ ही इतना चल रहा है हम ज्ञान सुनाते हैं तो सामने वाले को क्या असर होगा? उसको तीर तो लगेगा नहीं तो ज्ञान भी क्यों सुनायें? वास्तव में हम उसको ज्ञान नहीं सुना रहे, उस वक्त हम आपने आपको ज्ञान सुना रहे होते हैं और जब हम आपने आपको ज्ञान सुना रहे होते हैं तो क्या होता है कि जितनी देर आपने उसको ज्ञान सुनाया उतनी देर में धीरे-धीरे आपके विचार परिवर्तित होते हुए आप खुद महसूस करेंगे कि हाँ, जैसे फुलस्टॉप लग गया उस व्यर्थ की बात को। अच्छा, चलो ज्ञान सुनाना मुश्किल हो रहा है तो कोई बात नहीं, कर्मणा सेवा करो। जितना आप कर्मणा सेवा करेंगे तो उससे दो बात होगी। एक तो कर्मणा सेवा किया तो उसका पुण्य अर्जित होगा और दूसरों जब उस सेवा से कोई आत्मा प्रसन्न होती है तो उसकी दुआयें भी मिलती हैं। तो ये दो चीज़ें प्राप्त होने से व्यर्थ को समाप्त करना आसान हो जाता है।

- क्रमशः

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विधानसभा रोड स्थित शासकीय प्रयास बालक आवासीय विद्यालय में आयोजित 'एकाग्रता से सफलता' विषयक व्याख्यान को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी,सम्पादक,ज्ञानामृत पत्रिका,मा.आबू। इस मौके पर ब्र.कु. अदिति बहन एवं श्रीमति रेणु बहन उपस्थित रहे।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO: - 30826907041,IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087